अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
''नेकी की दा'वत'' से लिये गए मवाद की क़िस्त : 7

हफ़्तावार रिसाला : 188
WEEKLY BOOKLET : 188

Rishtedaaron Se Bhalaai (Hindi)

रिश्तेदारों से भलाई

सफ़हात 22

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

रिश्ते दारों से भलाई

येह रिसाला **(रिश्ते दारों से भलाई)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद 1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

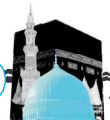

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 155 ता 170 से लिया गया है।

रिश्ते दारों से भलाई

दुआए अ़त्तार

या **रब्बल मुस्तफ़ा** ! जो कोई 21 सफ़ह़ात का रिसाला "**रिश्ते दारों से भलाई**" पढ़ या सुन ले उसे और उस के सारे ख़ानदान को ह़ज, मदीनए पाक की बा अदब ह़ाज़िरी, जलवए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ص۲۷حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहां रिश्ता तोड़ने वाला मौजूद हो वहां रह़मत नहीं उतरती : "**त़बरानी**" में ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه एक बार सुब्ह़ के वक़्त मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने फ़रमाया : मैं क़ातेए रेह़म (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) को **अल्लाह** की क़सम देता हूं कि

www.dawateislami.net

वोह यहां से उठ जाए ताकि हम **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करें क्यूं कि क़ातेए़ रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ने वाले) पर आस्मान के दरवाज़े बन्द रहते हैं । (या'नी अगर वोह यहां मौजूद रहेगा तो रह़मत नहीं उतरेगी और हमारी दुआ़ क़बूल नहीं होगी) (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج ۹ ص۱۰۸رقم۸۷۹۳)

"हुस्ने सुलूक" के 7 हुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेह़्मी के सात मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1197 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़्ह़ा 559 ता 560 पर से "**हुस्ने सुलूक**" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात **मदनी फूल** क़बूल फ़रमाइये :

﴾1﴿ किस रिश्तेदार से क्या बरताव करे : अह़ादीस में मुत्लक़न (या'नी बिग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुत्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल क़ुरबा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ दरजात हैं (इसी त़रह़) सिलए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के दरजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है । वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेह़्म मह़रम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से नसबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब । (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़)
(رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

﴾2﴿ रिश्तेदार से सुलूक की सूरतें : सिलए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोह़फ़ा देना और अगर इन को किसी बात में तुम्हारी इआ़नत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में इन की मदद करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना बैठना, इन से बातचीत करना, इन के साथ लुत्फ़ व मेहरबानी से पेश आना। (دُرَر، ج۱ ص۳۲۳)

﴾3﴿ परदेस हो तो ख़त़ भेजा करे : अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त़ भेजा करे, इन से ख़त़ व किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत़न आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस त़रह़ करने से **मह़ब्बत** में इज़ाफ़ा होगा। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸) (फ़ोन या इन्टरनेट के ज़रीए भी राबित़े की तरकीब मुफ़ीद है)

﴾4﴿ परदेस में हो, मां बाप बुलाएं तो आना पड़ेगा : येह परदेस में है वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त़ लिखना काफ़ी नहीं है। यूहीं वालिदैन को इस की ख़िदमत की ह़ाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे, बाप के बा'द दादा और बड़े भाई का मर्तबा है कि बड़ा भाई **ब मन्ज़िलए** बाप के होता है, बड़ी बहन और ख़ाला मां की जगह पर हैं, बा'ज़ उ़लमा ने चचा को बाप की मिस्ल बताया और ह़दीस : عَمُّ الرَّجُلِ صِنْوُ اَبِيْهِ (या'नी आदमी का चचा बाप की मिस्ल होता है) से भी येही मुस्तफ़ाद होता (या'नी नतीजा निकलता) है। इन के इलावा औरों के पास ख़त़ भेजना हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) भेजना किफ़ायत करता है। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

www.dawateislami.net

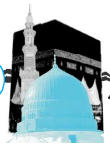

﴾5﴿ किस किस रिश्तेदार से कब कब मिले : रिश्तेदारों से नाग़ा दे कर मिलता रहे या'नी एक दिन मिलने को जाए दूसरे दिन न जाए وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी इसी पर अन्दाज़ा लगा कर) कि इस से **महब्बत** व उल्फ़त ज़ियादा होती है, बल्कि अक़्रिबा (या'नी क़राबत दारों) से जुमुआ़ जुमुआ़ मिलता रहे या महीने में एक बार और तमाम क़बीले और ख़ानदान को एक (या'नी मुत्तह़िद) होना चाहिये, जब ह़क़ उन के साथ हो (या'नी वोह ह़क़ पर हों) तो दूसरों से मुक़ाबला और इज़्हारे ह़क़ में सब मुत्तह़िद हो कर काम करें। (دُرَر، ج۱ ص۳۲۳)

﴾6﴿ रिश्तेदार ह़ाजत पेश करे तो रद कर देना गुनाह है : जब अपना कोई रिश्तेदार कोई ह़ाजत पेश करे तो उस की ह़ाजत रवाई करे, उस को रद कर देना क़त़्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ना) है। (ایضاً) (याद रहे ! सिलए रेह़्म वाजिब है और क़त़्ए रेह़्म ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है)

﴾7﴿ सिलए रेह़्म येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो : सिलए रेह़्मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए। ह़क़ीक़तन **सिलए रेह़्म** (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के हुक़ूक़ की मुराआ़त (या'नी लिह़ाज़ व रिआ़यत) करो। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

www.dawateislami.net

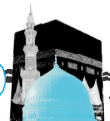

हुस्ने ज़न रखने का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा सातों **मदनी फूल** निहायत तवज्जोह के क़ाबिल हैं, बिल ख़ुसूस सातवें **मदनी फूल** जिस में "अदले बदले" का ज़िक्र है इस के बारे में अ़र्ज़ है कि आज कल उ़मूमन येही "अदला बदला" हो रहा है। एक रिश्तेदार अगर इस को शादी की दा'वत देता है जभी येह उस को देता है अगर वोह न दे तो येह भी नहीं देता। अगर उस एक ने इस को ज़ियादा अफ़राद की दा'वत दी और येह अगर उस को कम अफ़राद की दा'वत दे तो इस का ठीक ठाक नोटिस लिया जाता, ख़ूब तन्क़ीदें और ग़ीबतें की जाती हैं। इसी त़रह़ जो रिश्तेदार इस के यहां किसी तक़रीब में शिर्कत नहीं करता तो येह उस के यहां होने वाली तक़रीब का बाएकाट कर देता है और यूं फ़ासिले मज़ीद बढ़ाए जाते हैं। ह़ालां कि कोई हमारे यहां शरीक न हुवा हो तो उस के बारे में अच्छा गुमान रखने के कई पहलू निकल सकते हैं, मसलन वोह न आने वाला बीमार हो गया होगा, भूल गया होगा, ज़रूरी काम आ पड़ा होगा, या कोई सख़्त मजबूरी होगी जिस की वज़ाह़त उस के लिये दुश्वार होगी वग़ैरा। वोह अपनी ग़ैर ह़ाज़िरी का सबब बताए या न बताए, हमें **हुस्ने ज़न** रख कर सवाब कमाना और जन्नत में जाने का सामान करते रहना चाहिये। चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ या'नी हुस्ने ज़न उ़म्दा इबादत से है। (ابوداؤد ج٤ ص٣٨٨ حديث ٤٩٩٣) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ मत़ालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर **बद गुमानी** न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक **इबादत** है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 621)

जन्नत का मह़ल उस को मिलेगा जो......: बिलफ़र्ज़ हमारा रिश्तेदार सुस्ती के सबब या किसी भी वज्ह से जान बूझ कर हमारे यहां नहीं आया या हमें अपने यहां मदऊ़ नहीं किया बल्कि उस ने खुल्लम खुल्ला हमारे साथ बद सुलूकी की तब भी हमें बड़ा ह़ौसला रखते हुए तअ़ल्लुक़ात बर क़रार रखने चाहिएं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो उसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो उस से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नात़ा (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े।

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاکِم ج۳ ص۱۲ حدیث ۳۲۱۵)

दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार को सदक़ा देना अफ़्ज़ल तरीन है : बहर ह़ाल कोई हमारे साथ ह़ुस्ने सुलूक करे या न करे हमें ह़ुस्ने सुलूक जारी रखना चाहिये। **"मुस्नदे इमाम अह़मद"** की ह़दीसे पाक में है : **اِنَّ اَفْضَلَ الصَّدَقَةِ الصَّدَقَةُ عَلٰی ذِی الرَّحِمِ الْكَاشِحِ** बेशक अफ़्ज़ल तरीन सदक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार पर किया जाए।

(مُسندِ اِمام احمد ج۹ ص۱۳۸ حدیث۲۳۵۸۹)

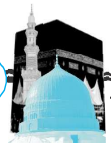

रिश्तेदार से जब सख़्त दुख पहुंचा : अमीरुल मुअमिनीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र **सिद्दीक़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपने ख़ालाज़ाद भाई ग़रीब व नादार व मुहाजिर और बद्री सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जिन का आप ख़र्च उठाते थे उन से सख़्त रन्ज पहुंचा और वोह येह कि उन्हों ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की प्यारी बेटी या'नी **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवाफ़क़त की थी (वोह त़वील क़िस्सा है जो कि "वाक़िआ़ए इफ़्क" कहलाता है इस का तज़्किरा सफ़ह़ा **196** पर आ रहा है) इस पर आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने ख़र्च न देने की क़सम खाई। इस पर पारह 18 **सूरतुन्नूर** की आयत नम्बर 22 नाज़िल हुई। वोह आयते मुबारका येह है :

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۗ أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

www.dawateislami.net

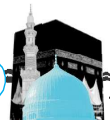

जब येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत करे और मैं मिस्त़ह़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़ूफ़ (या'नी बन्द) न करूंगा चुनान्चे आप (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ने उस (माली तआ़वुन) को जारी फ़रमा दिया। इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी काम पर **क़सम** खाए फिर मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और **क़सम का कफ़्फ़ारा** दे, ह़दीसे सह़ीह़ में येही वारिद है। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस आयत से ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उ़लुव्वे शान व मर्तबत (या'नी रुत्बे की अ़ज़मत) ज़ाहिर होती है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को (आयते क़ुरआनी में) **ऊलुल फ़ज़्ल** (या'नी फ़ज़ीलत वाला इर्शाद) फ़रमाया। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 563) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का
मक़ामे ख़्वाबे राह़त चैन से आराम करने को
बना पहलूए महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

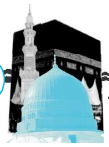

क़सम और उस के कफ़्फ़ारे का बयान (हनफ़ी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन आ़शिक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के वाक़िए़ में **क़सम** का और तफ़्सीर में **क़सम के कफ़्फ़ारे** का तज़्किरा है, चूंकि आज कल कसीर लोगों का बात बात पर क़समें खाने की त़रफ़ रुजह़ान देखा जा रहा है, बारहा झूटी क़सम भी खा ली जाती है, न तौबा का शुऊ़र न कफ़्फ़ारा देने की कोई शुदबुद, लिहाज़ा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का सवाब कमाने की ह़िर्स के सबब बत़ौरे **नेकी की दा'वत** क़दरे तफ़्सील के साथ **क़सम** और इस के **कफ़्फ़ारे** के बारे में **मदनी फूल** पेश करता हूं, क़बूल फ़रमाइये। इस का अज़् इब्तिदा ता इन्तिहा मुत़ालआ़ या बा'ज़् इस्लामी भाइयों का मिल बैठ कर दर्स देना सिर्फ़ मुफ़ीद ही नहीं, اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद तरीन साबित होगा।

क़सम की ता'रीफ़ : क़सम को अ़रबी ज़बान में "**यमीन**" कहते हैं जिस का मत़लब है : "दाहिनी (या'नी सीधी) जानिब", चूंकि अहले अ़रब उ़मूमन **क़सम** खाते या क़सम लेते वक़्त एक दूसरे से दाहिना (या'नी सीधा) हाथ मिलाते थे इस लिये **क़सम** को "यमीन" कहने लगे, या फिर **यमीन** "**युम्न**" से बना है जिस के मा'ना हैं "बरकत व क़ुव्वत", चूंकि क़सम में **अल्लाह** तआ़ला का बा बरकत नाम भी लेते हैं और इस से अपने कलाम को क़ुव्वत देते हैं इस लिये इसे **यमीन** कहते हैं

www.dawateislami.net

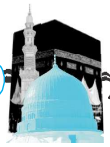

या'नी बरकत व क़ुव्वत वाली गुफ़्तगू। (मुलख़्ख़स अज़ मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 194) शरई ए'तिबार से **क़सम** उस अ़क़्द (या'नी अ़ह्दो पैमां) को कहते हैं जिस के ज़रीए़ क़सम खाने वाला किसी काम के करने या न करने का पुख़्ता (पक्का) इरादा करता है। (دُرِّمُختار ج۵ ص۴۸۸) मसलन किसी ने यूं कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कल तुम्हारा सारा क़र्ज़ अदा कर दूंगा" तो येह **क़सम** है।

क़सम की तीन अक़्साम : क़सम तीन त़रह़ की होती है :

(1) लग़्व (2) ग़मूस (3) मुन्अ़क़िदा।

﴾1﴿ **लग़्व** येह है कि किसी गुज़रे हुए या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर अपने ख़याल में (या'नी ग़लत़ फ़ह्मी की वज्ह से) सह़ीह़ जान कर **क़सम** खाए और दर ह़क़ीक़त वोह बात उस के ख़िलाफ़ (या'नी उलट) हो, मसलन किसी ने क़सम खाई : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़ैद घर पर नहीं है" और इस की मा'लूमात में येही था कि ज़ैद घर पर नहीं है और इस ने अपने गुमान में सच्ची क़सम खाई थी मगर ह़क़ीक़त में ज़ैद घर पर था तो येह क़सम "लग़्व" कहलाएगी, येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं ﴾2﴿ **ग़मूस** येह है कि किसी गुज़रे हुए या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) झूटी क़सम खाए मसलन किसी ने क़सम खाई : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़ैद घर पर है," और वोह जानता है कि ह़क़ीक़त में ज़ैद घर पर नहीं है तो येह क़सम "ग़मूस" कहलाएगी और क़सम खाने वाला सख़्त गुनहगार हुवा, इस्तिग़फ़ार व तौबा फ़र्ज़ है मगर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं ﴾3﴿ **मुन्अ़क़िदा**

www.dawateislami.net

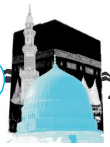

येह है कि आयन्दा के लिये क़सम खाई मसलन यूं कहा : ''रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कल तुम्हारे घर ज़रूर आऊंगा।'' मगर दूसरे दिन न आया तो **क़सम** टूट गई, उसे **कफ़्फ़ारा** देना पड़ेगा और बा'ज़ सूरतों में गुनहगार भी होगा। (فتاوٰی عالمگیری ج۲ص۵۲)

ख़ुलासा येह हुवा कि क़सम खाने वाला किसी गुज़री हुई या मौजूदा बात के बारे में क़सम खाएगा तो वोह या तो सच्चा होगा या फिर झूटा, अगर सच्चा होगा तो कोई ह़रज नहीं और अगर झूटा होगा तो उस ने वोह क़सम अपने ख़याल के मुत़ाबिक़ अगर सच्ची खाई थी तो अब भी ह़रज नहीं या'नी गुनाह भी नहीं और कफ़्फ़ारा भी नहीं हां अगर उसे पता था कि मैं झूटी क़सम खा रहा हूं तो गुनहगार होगा मगर कफ़्फ़ारा नहीं है, और अगर इस ने **आयन्दा के लिये** किसी काम के करने या न करने की **क़सम** खाई तो अगर वोह क़सम पूरी कर देता है फ़बिहा (या'नी ख़ूब बेहतर) वरना **कफ़्फ़ारा** देना होगा और बा'ज़ सूरतों में क़सम तोड़ने की वज्ह से गुनहगार भी होगा। (इन सूरतों की तफ़्सील आगे आ रही है)

झूटी क़सम खाना गुनाहे कबीरा है : रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की ना फ़रमानी करना, किसी जान को क़त्ल करना और **झूटी क़सम** खाना कबीरा गुनाह हैं।''

(بُخاری ج٤ص٢٩٥حدیث٦٦٧٥)

सब से पहले झूटी क़सम शैत़ान ने खाई : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सज्दा न करने की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

वजह से शैत़ान मरदूद हुवा था लिहाज़ा वोह आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नुक़्सान पहुंचाने की ताक में रहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदैना **आदम व ह़व्वा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام وَ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया कि जन्नत में रहो और जहां दिल करे बे रोक टोक खाओ अलबत्ता इस ''दरख़्त'' के क़रीब न जाना। शैत़ान ने किसी त़रह़ ह़ज़राते सय्यिदैना **आदम व ह़व्वा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام وَ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें ''**शजरे ख़ुल्द**'' बता दूं, ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मन्अ़ फ़रमाया तो शैत़ान ने **क़सम** खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह (या'नी भलाई चाहने वाला) हूं। इन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है! येह सोच कर ह़ज़रते सय्यिदतुना **ह़व्वा** رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने इस में से कुछ खाया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दिया उन्हों ने भी खा लिया। (مُلَخَّص از تفسیر عبد الرزاق ج۲ ص۷۶) जैसा कि पारह 8 **सूरतुल आ'राफ़** की आयत 20 और 21 में इर्शाद होता है :

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُۥرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर शैत़ान ने उन के जी में ख़त़रा डाला कि उन पर खोल दे उन की शर्म की चीज़ें जो उन से छुपी थीं और बोला : तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले और उन से **क़सम** खाई कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं।

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى तफ़्सीरे **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में लिखते हैं : मा'ना येह हैं कि इब्लीसे मल्ऊ़न ने झूटी क़सम खा कर ह़ज़रते (सय्यिदुना) आदम (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को धोका दिया और **पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है,** ह़ज़रते आदम (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को गुमान भी न था कि कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर झूट बोल सकता है, इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया।

किसी का ह़क़ मारने के लिये झूटी क़सम खाने वाला जहन्नमी है : रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : जो क़सम खा कर किसी मुसल्मान का ह़क़ मार ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देता और उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर्चे वोह थोड़ी सी चीज़ ही हो ? इर्शाद फ़रमाया : "अगर्चे **पीलू** की शाख़ ही हो।" **(مُسلِم ص٨٢ حديث ٢١٨-(١٣٧)) पीलू** एक दरख़्त है जिस की शाख़ और जड़ से मिस्वाक बनाते हैं।

झूटी क़सम खाने वाले के ह़श्र में हाथ पाउं कटे हुए होंगे : एक **ह़ज़्रमी** (या'नी **मुल्के यमन** के शहर "**ह़ज़्र मौत**" के बाशिन्दे) और एक **किन्दी** (या'नी क़बीलए **किन्दा** से वाबस्ता एक शख़्स) ने मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अन्वर में **यमन** की एक ज़मीन के **मुतअ़ल्लिक़** अपना झगड़ा पेश किया, **ह़ज़्रमी** ने

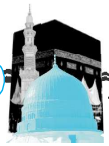

अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** मेरी ज़मीन इस के बाप ने छीन ली थी, अब वोह इस के क़ब्ज़े में है।" तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास कोई गवाही है ?" अ़र्ज़ की : "नहीं, लेकिन मैं इस से क़सम लूंगा कि **अल्लाह** की क़सम खा कर कहे कि वोह नहीं जानता कि वोह मेरी ज़मीन है जो इस के बाप ने ग़सब कर ली थी।" **किन्दी** क़सम खाने के लिये तय्यार हो गया तो रसूले अकरम, शहन्शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो (झूटी) क़सम खा कर किसी का माल दबाएगा वोह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस ह़ालत में पेश होगा कि **उस के हाथ पाउं कटे हुए होंगे।**" येह सुन कर **किन्दी** ने कह दिया कि येह ज़मीन उसी (या'नी ह़ज़्रमी) की है। (سُنَنِ ابوداوٗدج۳ص۲۹۸حدیث۳۲۴۴)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ الله ! येह है असर उस ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान का कि दो कलिमात में उस (किन्दी) के दिल का ह़ाल बदल गया और सच्ची बात कह कर ज़मीन से ला दा'वा हो गया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 403)

सात ज़मीनों का हार : रिश्वतों के ज़रीए़ दूसरों की जगहों पर क़ब्ज़ा कर के इमारतें बनाने वालों, लोगों की त़रफ़ से ठेके पर मिली हुई ज़रई ज़मीनें दबा लेने वाले किसानों, वडेरों और ख़ाइन ज़मीन दारों को घबरा कर झटपट तौबा कर लेनी चाहिये और जिन जिन के हुक़ूक़ दबाए हैं वोह फ़ौरन अदा कर देने चाहिएं कि "मुस्लिम शरीफ़" में सरकारे

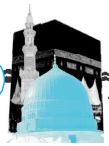

नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स किसी की बालिश्त भर ज़मीन नाहक़ तौ़र पर लेगा तो उसे क़ियामत के रोज़ सात ज़मीनों का तौक़ (या'नी हार) पहनाया जाएगा।"

(صَحیح مُسلِم ص۸۶۹ حدیث ۱۶۱۰)

शारेए़ आ़म पर बिला ह़ाजते शरई़ रास्ता मत घेरिये :

बा'ज़ लोग शारेए़ आ़म पर बिला ह़ाजत रास्ता घेर लेते हैं जिन में कई सूरतें लोगों के लिये सख़्त तक्लीफ़ का बाइ़स बनती हैं, मसलन ﴾1﴿ बक़र ईद के दिनों में क़ुरबानी के जानवर बेचने या किराए पर रखने या ज़ब्ह़ करने के लिये बा'ज़ जगह बिला ज़रूरत पूरी पूरी गलियां घेर लेते हैं ﴾2﴿ रास्ते में तक्लीफ़ देह ह़द तक कचरा या मल्बा डालते, ता'मीरात के लिये ग़ैर ज़रूरी तौ़र पर बजरी और सरियों का ढेर लगा देते हैं और यूंही ता'मीरात के बा'द महीनों तक बचा हुवा सामान व मल्बा पड़ा रहता है ﴾3﴿ शादी व ग़मी की तक़्रीबों, नियाज़ों वग़ैरा के मौक़ओं पर गलियों में देगें पकाते हैं जिन से बा'ज़ अवक़ात ज़मीन पर गढ़े पड़ जाते हैं, फिर उन में कीचड़ और गन्दे पानी के ज़ख़ीरे के ज़रीए़ मच्छर पैदा होते और बीमारियां फैलती हैं ﴾4﴿ आ़म रास्तों में खुदाई करवा देते हैं मगर ज़रूरत पूरी हो जाने के बा वुजूद भरवा कर ह़स्बे साबिक़ हमवार नहीं करते ﴾5﴿ रिहाइश या कारोबार के लिये ना जाइज़ क़ब्ज़ा जमा कर इस त़रह़ जगह घेर लेते हैं कि लोगों का रास्ता तंग हो जाता है। इन सब के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मकतबतुल मदीना** की

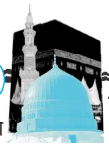

मत़्बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल** (जिल्द अव्वल)'' सफ़ह़ा 816 पर इमाम इब्ने **ह़जर** मक्की शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی कबीरा गुनाह नम्बर 215 में इस फ़े'ल (या'नी काम) को गुनाहे कबीरा क़रार देते हुए फ़रमाते हैं : ''शारेए़ आ़म में ग़ैर शरई़ तसर्रुफ़ (मुदाख़लत) करना या'नी ऐसा तसर्रुफ़ (या'नी दख़्ल देना या अ़मल इख़्तियार) करना जिस से गुज़रने वालों को सख़्त नुक़्सान पहुंचे'' इस का सबब बयान करते हुए तह़रीर करते हैं कि इस में लोगों की ईज़ा रसानी और ज़ुल्मन उन के ह़ुक़ूक़ का दबाना पाया जा रहा है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''जिस ने एक बालिश्त ज़मीन ज़ुल्म के तौ़र पर ले ली क़ियामत के दिन सातों ज़मीनों से इतना ह़िस्सा तौ़क़ बना कर उस के गले में डाल दिया जाएगा।'' **(صحیح بُخاری ج ۲ ص ۳۷۷ حدیث ۳۱۹۸)**

झूटी क़सम घरों को वीरान कर छोड़ती है : झूटी क़सम के नुक़्सानात का नक़्शा खींचते हुए **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **झूटी क़सम** घरों को वीरान कर छोड़ती है (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 602) एक और मक़ाम पर लिखते हैं : झूटी क़सम गुज़श्ता बात पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर खाने वाले पर अगर्चे) इस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं, (मगर) इस की सज़ा येह है कि **जहन्नम के खौलते दरिया में ग़ोते दिया जाएगा।** (फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 611) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ज़रा ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस ने हमें पैदा किया, पूरी काएनात को तख़्लीक़ किया (या'नी

www.dawateislami.net

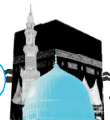

बनाया), जिस पर हर हर बात ज़ाहिर है, कोई चीज़ उस से पोशीदा नहीं, ह़त्ता कि दिलों के भेद भी वोह ख़ूब जानता है, जो रह़मान व रह़ीम भी है और क़ह्हार व जब्बार भी है, उस रब्बुल अनाम का नाम ले कर **झूटी क़सम** खाना कितनी बड़ी नादानी की बात है और वोह भी दुन्या के किसी आ़रिज़ी (वक़्ती) फ़ाएदे या चन्द सिक्कों के लिये !

यहूदियों ने शाने मुस्तफ़ा छुपाने के लिये झूटी क़सम खाई : यहूद के अह़बार (या'नी उ़लमा) और इन के रईसों (या'नी सरदारों) **अबू राफ़ेअ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़** और **का'ब बिन अशरफ़** और **हुय्यिब्नि अख़्तब** ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वोह अ़ह्द छुपाया जो सय्यिदे आ़लम, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के **मुतअ़ल्लिक़** इन से **तौरैत** शरीफ़ में लिया गया। वोह इस त़रह़ कि उन्हों ने इस को बदल दिया और इस की जगह अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और **झूटी क़सम** खाई कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और मालो ज़र ह़ासिल करने के लिये किया। उन के बारे में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۷﴾

(پ۳،ال عمرٰن:۷۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** के अ़ह्द और अपनी **क़समों** के बदले ज़लील दाम लेते हैं आख़िरत में उन का कुछ ह़िस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात करे,

www.dawateislami.net

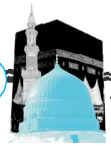

न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

(تفسیرِ خازن ج۱ص۲٦۵)

नीली आंखों वाला मुनाफ़िक़ : अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल (नामी एक) मुनाफ़िक़ (था) जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में ह़ाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता (था), एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ फ़रमा थे, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस वक़्त एक आदमी आएगा जिस का दिल निहायत सख़्त और शैत़ान की आंखों से देखता है, थोड़ी ही देर बा'द **अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल** आया, उस की आंखें **नीली** थीं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : तू और तेरे साथी क्यूं हमें गालियां देते हैं ? वोह **क़सम** खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया, उन्हों ने भी **क़सम** खाई कि हम ने आप को गाली नहीं दी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لَا مِنْهُمْ ۙ وَ يَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾

(پ۲۸،مجادلہ:۱۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर **अल्लाह** का ग़ज़ब है, वोह न तुम में से न उन में से, वोह दानिस्ता **झूटी क़सम** खाते हैं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

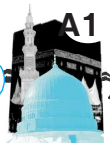

जहन्नम में ले जाने का हुक्म होगा : मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम में ले जाने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? इर्शाद होगा : नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की **झूटी क़समें** खाने की वज्ह से। (مُکاشَفَةُ القُلوب ص۱۸۹)

झूटी क़सम खाने वाले ताजिर के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है : हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, **दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ऊ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन से **अल्लाह** तआ़ला न कलाम फ़रमाएगा, न उन की त़रफ़ नज़रे करम फ़रमाएगा और न ही उन्हें पाक करेगा बल्कि उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह बात तीन बार इर्शाद फ़रमाई तो मैं ने अ़र्ज़ की : वोह तो तबाह व बरबाद हो गए, वोह कौन लोग हैं ? इर्शाद फ़रमाया : ﴾1﴿ **तकब्बुर** से अपना तहबन्द लटकाने वाला और ﴾2﴿ एह़सान जतलाने वाला और ﴾3﴿ झूटी क़सम खा कर अपना माल बेचने वाला। (صَحیح مُسلِم ص۶۷ حدیث۱۷۱(۱۰۶))

झूटी क़सम से बरकत मिट जाती है : इस रिवायत से खुसूसन वोह ताजिर व दुकान दार ह़ज़रात इब्रत पकड़े जो **झूटी क़समें** खा कर अपना माल फ़रोख़्त करते हैं, अश्या के ऊ़यूब (या'नी ख़ामियां)

छुपाने और नाक़िस व घटिया माल पर ज़ियादा नफ़्अ़ कमाने की ख़ातिर पै दर पै **क़समें** खाए चले जाते हैं और इस में किसी क़िस्म की आ़र (या'नी शर्म व झिजक) मह़सूस नहीं करते, इन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है कि शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **झूटी क़सम** से सौदा फ़रोख़्त हो जाता है और बरकत मिट जाती है। (كَنْزُ الْعُمّال ج١٦، ص٢٩٧حديث٤٦٣٧٦)

एक और जगह फ़रमाया : ''**क़सम** सामान बिकवाने वाली है और बरकत मिटाने वाली है।'' (صَحیح بُخاری ج٢ص١٠حديث٢٠٨٧)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरकत (मिट जाने) से मुराद आयन्दा कारोबार बन्द हो जाना हो या किये हुए ब्योपार में घाटा (या'नी नुक़्सान) पड़ जाना या'नी अगर तुम ने किसी को **झूटी क़सम** खा कर धोके से ख़राब माल दे दिया वोह एक बार तो धोका खा जाएगा मगर दोबारा न आएगा न किसी को आने देगा, या जो रक़म तुम ने उस से ह़ासिल कर ली उस में बरकत न होगी कि **ह़राम** में बे बरकती है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 344)

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** का (32 सफ़ह़ात) पर मुश्तमिल रिसाला ''कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात'' में है : **एक** बार ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक शख़्स घबराया हुवा ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : **आ़लीजाह !** मैं

बेहृद गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं कि आया मेरे लिये मुआ़फ़ी है या नहीं ? **ख़लीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीन व आस्मान से भी बड़ा है ? उस ने कहा : बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने पूछा : क्या तेरा गुनाह लौह़ व क़लम से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है। पूछा : क्या तेरा गुनाह अ़र्श व कुर्सी से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है। **ख़लीफ़ा** ने कहा : भाई यक़ीनन तेरा गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से तो बड़ा नहीं हो सकता। येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए़ उमंड आया और वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। **ख़लीफ़ा** ने कहा : भई आख़िर पता भी तो चले कि तुम्हारा गुनाह क्या है ! इस पर उस ने कहा : **हु़ज़ूर !** मुझे आप को बताते हुए बेहृद नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी **तौबा** की कोई सूरत निकल आए। येह कह कर उस ने अपनी **दास्ताने वह़्शत निशान** सुनानी शुरूअ़ की। कहने लगा : आ़लीजाह ! मैं एक **कफ़न चोर** हूं, आज रात मैं ने **पांच क़ब्रों** से इ़ब्रत हा़सिल की और तौबा पर आमादा हुवा। फिर उस ने पांच क़ब्रों के इ़ब्रत नाक अह़वाल सुनाए, एक **क़ब्र** का हा़ल सुनाते हुए उस ने कहा : **कफ़न** चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब **दूसरी क़ब्र** खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था ! क्या देखता हूं कि **मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका है और वोह तौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है।** ग़ैब से आवाज़ आई : येह **झूटी क़समें** खाता और **ह़राम रोज़ी** कमाता था। (ماخوذ از تذکرۃ الواعظین ص٦١٢)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

हदीसे कुद्सी

अल्लाह पाक ने रेहूम (रिश्तेदारी) से फ़रमाया : जो तुझे मिलाएगा मैं उसे मिलाऊंगा और जो तुझे काटेगा मैं उसे काटूंगा।

(بخاری، کتاب الادب، باب من وصل وصله اللہ، 4/98، حدیث: 5988)

978-969-722-164-6
01082179

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net